रहीम ग्रन्थावली

रहीम की सम्पूर्ण कृतियों का प्रामाणिक संस्करण
विस्तृत भूमिका और जीवनचरित के साथ

सम्पादक
विद्यानिवास मिश्र

संयुक्त सम्पादक
गोविन्द रजनीश

ISBN 81-903158-2-X

जैनिथ पब्लिशर्स
4695/21-ए, दरियागंज नई दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 2005
© लेखकाधीन
मूल्य : 175.00

शुभम् ऑफसेट, दिल्ली-110032
में मुद्रित

RAHEEM GRANTHAWALI
Ed. by Dr. Vidyaniwas Mishra

जैनिथ पब्लिशर्स वाणी प्रकाशन की सहयोगी संस्था

दोहावली

तैं[1] रहीम मन आपुनो, कीन्हों चारु चकोर।
निसि बासर लागो रहै, कृष्णचंद्र की ओर।।1।।

अच्युत-चरण[2]-तरंगिणी,[3] शिव-सिर-मालति-माल।
हरि न बनायो सुरसरी, कीजो इंदव-भाल।।2।।

अधम वचन काको[4] फल्यो, बैठि ताड़ की छाँह।
रहिमन काम न आय है, ये नीरस जग माँह।।3।।

अन्तर दाव लगी रहै, धुआँ न प्रगटै सोइ।
कै जिय आपन जानहीं, कै जिहि बीती होइ।।4।।

अनकीन्हीं बातैं करै, सोवत जागै जोय।
ताहि सिखाय जगायबो[5] रहिमन उचित न होय।।5।।

अनुचित उचित रहीम लघु, करहिं बड़ेन के जोर।
ज्यों ससि के संजोग तें, पचवत आगि चकोर।।6।।

अनुचित वचन न मानिए जदपि[6] गुराइसु[7] गाढ़ि।
है रहीम रघुनाथ तें,[8] सुजस भरत को[9] बाढ़ि।।7।।

अब रहीम चुप करि रहउ,[10] समुझि[11] दिनन कर[12] फेर।
जब दिन नीके[13] आइ हैं बनत न लगि है देर।।8।।

अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिलैं न राम।।9।।

पाठान्तर— 1. जिहि। 2. चरन। 3. तरंगिनी। 4. ते को।
5. जानि अनेती जो करै जागत ही रह सोय।
ताहि जगाय बुझायबो।।
6. यदपि। 7. गुराइस। 8. से। 9. कर। 10. रहिमन चुप है बैठिये। 11. देखि।
12. को। 13. नीके दिन।